विनती

(प्रभु दर्श)

प्रभु दर्श कर आज घर जा रहे है।
झुका तेरे चरणों में सर जा रहे हैं। टेक।।

यहां से कभी, दिल न जाने को करता।
करें कैसे जाए, बिना भी न सरता।।
अगरचे हृदय नैन, भर आ रहे है। प्रभु.....

हुई पूजा भक्ति, न कुछ सेवकाई।
न मन्दिर में बहुमूल्य वस्तु चढ़ाई।।
ये खाली फकत, हाथ जोड़ कर जा रहे है। प्रभु.....

सुना तुमने तारे, अधर्म चोर पापी।
न धर्मी सही, फिर भी, तेरे हैं हामी।।
हमें भी तो करना, अमर जा रहे है। प्रभु.....

बुलाना यहां फिर भी, दर्शन को अपने।
सुमत तुम भरोसे, लगे कर्म हरने।।
खबर लेते रहना, जरा जा रहे है। प्रभु.....